पूर्वमेघ के उदाहरणों से उपमा कालिदासस्य की विवेचना करें।

अलौकिक प्रतिभासंपन्न क्रान्तदर्शी महाकवियों की अनुपम कृतियों में भी कुछ ऐसी विशेषताएँ रहती हैं, जो उस कोटि के अन्य सभी कवियों में भी न्यूनाधिक मात्रा में अवश्य पायी जाती है, फिर भी सभी की प्रतिभा और रुचि समान नहीं होती सबका अध्ययन एक-सा नहीं रहता। सभी कवियों के समय की राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदि परिस्थितियाँ समान नहीं रहतीं, सभी के वर्ण्य-विषय भी एक-से नहीं होते, यही कारण है कि किसी कवि के काव्य में कोई दूसरी खास विशेषता और वही अन्य साधारण विशेषता किसी कवि को अन्य कवियों से ऊपर उठाकर उच्च आसन पर बैठा देती है।

वैसे तो सभी कवियों के काव्यों में यथासंभव किंवा यथास्थान अधिकाधिक अलंकारों का सन्निवेश पाया जाता है। स्वयं कालिदास के काव्य में भी उपमा के अतिरिक्त उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, रूपक, एवं यमक आदि अलंकारों का प्रयोग भी बड़ी सफलता से किया गया है परन्तु कालिदास की विशेष ख्याति उनकी मौलिक, मर्मस्पर्शी एवं मनोवैज्ञानिक उपमाओं के लिए ही है। यही कारण है कि काव्य-जगत् में जैसे औषध का पद-लालित्य प्रशंसनीय माना जाता है, अर्थगौरव में भारवि अद्वितीय माने जाते हैं, उसी प्रकार 'उपमा अलंकार' की योजना में किसी देश और किसी भाषा का अन्य कवि कालिदास की बराबरी नहीं कर सकता। इसी अभिप्राय से कहा गया है — 'उपमा कालिदासस्य'।

सुन्दर, सर्वाङ्गपूर्ण तथा निर्दोष उपमाओं के लिए कालिदास की जो ख्याति है, वह सर्वथा यथार्थ है। इनकी उपमाएँ अलौकिक हैं। इनमें उपमान और उपमेय का अद्भुत सादृश्य है। इनका काव्य ऐसा अभिनव एवं सुन्दर उपमाओं से भरा पड़ा है जो काव्य-रसिकों को आनन्द-विभोर कर देती है। एक विज्ञ आलोचक की सम्मति में "कालिदास की उपमाएँ उन कोमल किसलयों एवं नव-विकसित एवं सुगन्धित पुष्पों के समान हैं, जिन्होंने काव्य-उपवन को एक नवीन सौन्दर्य प्रदान किया है। अन्य कवियों की उपमाओं में उपमान एवं उपमेय के लिङ्ग और वचन में कहीं भिन्नता भी पायी जाती है, किन्तु कालिदास की उपमाओं में कदाचित् ही कहीं यह दोष पाया जाता है। इन्हीं सब कारणों से आलोचकों ने कालिदास को उपमा-सम्राट् की

उपाधि से विभूषित किया है। 'उपमा कालिदासस्य' में इनकी उपमानानि योजना की कुशलता की प्रशंसा की गई है—

"उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥"

वर्णन में सजीवता प्रदान करने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम कवि कालिदास की उपमाएँ हैं। जीवन और जगत् के रसहीन वर्णनों में कवि कालिदास ने उपमा-माधुरी का घोल घोलकर परम-माधुर्य की सृष्टि की है। कल्पना स्वप्न-परी के लोक में पहुँचाने का सशक्त माध्यम उपमाएं हैं। प्रस्तुत वर्णन में प्रयुक्त की गई कालिदास की उपमा कितनी सजीव है, इसका अनुभव कालिदास के काव्यों का अध्ययन करके स्वतः किया जा सकता है।

कालिदास द्वारा नियुक्त उपमाओं का क्षेत्र जैसे विविध है, वैसे ही उनमें रमणीयता, यथार्थता, औचित्य तथा पूर्णता के तत्त्व भी उपलब्ध होते हैं, जैसे वे प्रायः सहज भाव से सुरम्य हैं। ~~उदाहरणतः 'मेघदूत' में प्रयुक्त यह उपमा देखिए द्रष्टव्य है—~~

(1) "रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां।
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य॥"

यहाँ विन्ध्य पर्वत की तलहटी के चट्टानों वाले प्रदेश में बहने वाली रेवा नदी के प्रवाह को हाथी के बदन पर खींचे हुए चित्र-विचित्र रंग के बेलबूटों की उपमा देकर कवि ने उसकी रमणीयता व्यक्त की है। कालिदास की उपमाएँ कहीं भी श्लेष मूलक नहीं हैं; वे सहज साम्य पर निर्मित हुई हैं और इनकी तुलना में सुबन्धु, बाण, श्रीहर्ष इत्यादि पश्चाद्भावी कवियों की उपमाएँ श्लेषाश्लिष्ट होने के कारण कृत्रिम प्रतीत होती हैं।

कालिदास की उपमा योजना की एक विशिष्टता यह लक्षित होती है कि जैसे मानव सौन्दर्य को विवृत करने के लिए वे प्रकृति-राज्य से उपमानों का चयन करते हैं, वैसे ही प्राकृतिक दृश्यों अथवा व्यापारों के वर्णन में वे मानव-जगत् से उपमान ग्रहण करते हैं।

(2) "रत्नच्छायाव्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत्पुरस्ताद्-
वल्मीकाग्रात्प्रभवति धनुः खण्डमाखण्डलस्य।
येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमापत्स्यते ते
बर्हेणेव स्फुरितरुचिना गोपवेषस्य विष्णोः॥"

यहाँ रत्नों की कान्तियों के मिश्रण जैसे इन्द्रधनुष के टुकड़े से युक्त मेघ का श्यामशरीर उपमेय तथा मोरपंख वाले गोपवेशधारी कृष्ण का साँवला शरीर उपमान है।

कालिदास की उपमाएँ वर्णनीय वस्तु का यथार्थ रूप प्रस्तुत करने में सक्षम होती हैं। पके फलों की दीप्ति से भ्राजित वन्य रसालों द्वारा घिरे हुए शैलशिखर की शोभा मेघ से क्योंकर बढ़ जाती है, उसका सहज चित्र दर्शनीय है—

③ "घनोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रैः
त्वय्यारूढे शिखरमचलः स्निग्धवेणीसवर्णे।
नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां
मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः॥"

पके फलों से दीप्त जंगली आम के वृक्षों से घिरे उस पर्वत की चोटी पर, जब तुम चिकनी वेणी की तरह काले रंग से घिर जाओगे, तब उसकी शोभा देवदम्पत्तियों द्वारा देखने योग्य ऐसी हो जाएगी जैसे मध्य भाग में साँवला तथा अन्य सब ओर से पीला पृथ्वी का स्तन उठा हुआ हो।'

शैलराज हिमवन्त से नीचे उतरती हुई गंगा के स्फटिक के समान निर्मल स्वच्छ जल में जब मेघ की छाया पड़ेगी, तब वह धारा ऐसी सुशोभित होगी जैसे प्रयाग से अन्यत्र उसमें यमुना भी आ मिली हो। वहाँ आकर बैठनेवाले कस्तूरी-मृगों की नाभियों से निकलने वाली गंध से सुरभित शिलाओं वाले इस हिमधवल पर्वत के शिखर पर जब वह थकावट मिटाने के लिए बैठेगा, तब उसकी शोभा ऐसी जान पड़ेगी मानो शिव के वाहन, गौरवर्ण नंदी ने सींगों पर गीली मिट्टी लगा ली हो। —

④ "आसीनानां सुरभितशिलं नाभिगन्धैर्मृगाणां
तस्या एव प्रभवमचलं प्राप्य गौरं तुषारैः।
वक्ष्यस्यध्वश्रमविनयने तस्य शृङ्गे निषण्णः
शोभां शुभ्र त्रिनयनवृषोत्खातपङ्कोपमेयाम्॥"

चिकने फुटे हुए अंजन के समान काला वह मेघ, अभी कटे हाथी-दाँत के टुकड़े के समान, धवल कैलास की ढाल पर जब घिरेगा, तब वह ऐसे शोभित होगा जैसे गोरे रङ्ग वाले बलराम के कन्धों पर चटकीला नीला वसन हो। पुनः कैलास की गोद में बैठी अलका के ऊपर जब वह वर्षा की झड़ी लगा देगा, तब वह पूरी पुरी ऐसी शोभा देगी मानो मोतियों के जालों से गुँथे हुए घुँघराले केशों वाली कोई कामिनी हो। —

⑤ "तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलं
न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन्
या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना
मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम्॥"

हे इच्छारूप संचरण करनेवाले मेघ! जिसकी गङ्गा-

क्रोड

रुपी साड़ी सरक गई है, ऐसी उस अलका को प्रणयी की ~~क्रोड~~ में बैठी हुई देखकर तुम उसे अवश्य पहचान जाओगे; वर्षाकाल में जब उसके ऊँचे महलों पर घिरकर तुम सलिल की धारा बरसाने लगोगे, तब वह ऐसी सुशोभित होगी जैसे किसी कामिनी के सिर पर मोतियों की जाली से गुँथा हुआ मंद्र केश-बन्ध चमकता हो।'

~~श्यामवर्ण बंधुक की धारण किए हुए~~

"उत्पश्यामि त्वयि तटगते स्निग्धभिन्नाञ्जनाभे
सद्यःकृत्तद्विरददशनच्छेदगौरस्य तस्य।
शोभामद्रेः स्तिमितनयनप्रेक्षणीयां भवित्री-
मंसन्यस्ते सति हलभृतो मेचके वाससीव॥"

इन उद्धरणों से ज्ञात होता है कि मेघ की श्यामल कान्ति से कवि अधिक चमत्कृत है और ललित उपमाओं द्वारा उसकी भावना कराने के लिए वह व्यग्र हो उठा है।

उपर्युक्त प्रकार से कालिदास की उपमाओं की विलक्षणता को देखकर ~~हम~~ इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि उनके सम्बन्ध में प्रचलित 'उपमा कालिदासस्य' यह लोकोक्ति सर्वथा सत्य है।